मध्य संदेश

वर्ष-2024 अंक -8

हडको

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

संपादक
शानुज गुप्ता
क्षेत्रीय प्रमुख भोपाल

सह- संपादक
श्रीमती आशा वासवानी
वरि. प्रबंधक (सचि.) एवं
हिन्दी नोडल अधिकारी

सहयोग
श्रीमती विनय वर्मा
वरि. प्रबंधक (सचि.)

श्री हुकुमचन्द चौकसे
सहायक प्रबंधक (E-0)

डिजाईन एवं प्रिंटेड : एमएसपी ऑफसेट, भोपाल

हडको द्वारा वित्त पोषित

मुख्य मंत्री शहरी पेयजल योजना बैरसिया

मुख्य मंत्री शहरी पेयजल योजना कुम्भराज

म. प्र. पुलिस हाउसिंग योजना, भोपाल

डिस्क्लेमर:–
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, लेख आलेख जो कि कार्मिकों के निजी विचार हैं
या किसी भी माध्यम से जुटाये गए हैं, उनके लिये हडको प्रबंधन संपादन मण्डल उत्तरदायी नहीं है।

हडको

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा अपनी गृह ई-पत्रिका "मध्य संदेश" के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चित रूप से यह पत्रिका हडको मुख्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियों, कार्मिकों की रचनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभाओं को उजागर करने तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान देगी।

हडको ने विगत पाँच दशक के दौरान आवास और इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के क्षेत्र में प्रमुख तकनीकी-वित्तपोषण द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है। प्रचालन की दृष्टि से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) और निम्न आय समूह (एलआईजी) की आवास आवश्यकताओं को पूरा करने पर हडको विशेष बल देता है। विगत वर्षों में हडको ने आवास एवं इंफ्रास्ट्रक्चर के वित्त पोषण में अपना परचम लहराया है। हडको ने परियोजना-वित्तपोषण के जरिये भूमि विकास एवं भूमि अधिग्रहण, शहरी व ग्रामीण आवासीय योजनाओं, जल आपूर्ति, सीवरेज, ड्रेनेज, एन्वायरनमेंटल परियोजनाओं, ट्रांसपोरटेशन, इंडस्ट्रीयल परियोजनाओं, विद्युत जनरेशन, ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन परियोजनाओं, स्मार्ट सिटी विकास एवं टाउनशिप डेवलपमेंट इत्यादि परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के साथ- साथ आपदा (भूकंप व बाढ़) के बाद पुनर्वास के लिए आपदा प्रतिरोधी घर बनाने आदि में भी अपना योगदान दिया है। इसके अलावा हडको ने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सी.एस.आर) के तहत विभिन्न क्षेत्रों जैसे- स्वास्थ्य और पोषण, स्वच्छ भारत, मोबाइल शौचालय, स्कूल बिल्डिंग, यूथ डेवल्पमेंट सेन्टर, बारात घर व कम्यूनिटी हॉल, एम्बुलेंस खरीद आदि के लिए अनुदान दिया है।

हडको, राष्ट्र निर्माण एवं प्रगति में सतत् रूप से अपना योगदान देने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पूर्ण रचनाकारों को उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मध्य संदेश
वर्ष 2024 अंक 08

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का सतत् निर्वाह करते हुए कार्यालय की गृह पत्रिका "मध्य संदेश" के आठवें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों के मन और मस्तिष्क में राजभाषा हिन्दी के प्रति और अधिक अभिरूचि जागृत होगी। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताओं और अन्य रचनाओं के रचनाकार धन्यवाद के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित ।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

मध्य संदेश
वर्ष 2024 अंक 08

हडको

संदेश

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा अपनी गृह पत्रिका "मध्य संदेश" के आठवें अंक का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी तरह क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल अपने संवैधानिक दायित्वों के प्रति सजग रहते हुए राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करता रहेगा।

इस पत्रिका का प्रकाशन भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय के कार्मिकों में हिन्दी के प्रति उत्साह उत्पन्न करने एवं उनकी सृजनात्मक क्षमता से परिचित कराने में सफल होगा। मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

मध्य संदेश
वर्ष 2024 अंक 08

हडको

संदेश

पत्रिकाएँ संस्थानों का प्रतिबिम्ब होती हैं जिसमें संस्थान की गतिविधियों की जानकारी मिलने के साथ साथ कार्मिकों की प्रतिभा को उचित मंच मिलता है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान सिध्द हो रहा है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका "मध्य संदेश" के आठवें अंक का का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका की पठन सामग्री हर वर्ग के लिए रोचक एवं प्रेरणादायक सिध्द होगी। मैं भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय को "मध्य संदेश" पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

विनीत गुप्ता

विनीत गुप्ता
मुख्य सतर्कता अधिकारी

मध्य संदेश
वर्ष 2024 अंक 08

संपादक की कलम से

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा हिन्दी प्रचार-प्रसार की दिशा में अपनी ई-पत्रिका "मध्य संदेश" का प्रकाशन किया जा रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय उक्त पत्रिका में विभिन्न लेखों, कहानी, कविताओं का समावेश करते हुए राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ाने के लिए पूर्णतया प्रतिबद्ध है। पत्रिका के इस अंक में क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने हिन्दी ज्ञान व भाषा से लगाव का प्रदर्शन करने का अवसर मिला है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में सम्मिलित लेख/सामग्री पाठकों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्द्धक होगी। मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से पत्रिका में नियमित योगदान व सुझाव का आह्वान करता हूँ तथा "मध्य संदेश" के आठवें अंक के सफल एवं उद्देश्यपूर्ण ई-प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

शानुज गुप्ता
क्षेत्रीय प्रमुख

हडको

सह संपादक की कलम से

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की ई पत्रिका "मध्य संदेश" का आठवाँ अंक प्रकाशित होने पर गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। इस वर्ष भी यह प्रयास हडको क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से संभव हुआ है। मध्य संदेश पत्रिका में विभिन्न प्रकार की रोचक पाठन सामग्री को सम्मिलित किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी पाठकों को पसंद आएगी ।

शुभकामनाओं सहित ।

आशा वासवानी
वरिष्ठ प्रबंधक सचि. एवं सह-संपादक

अनुक्रमाणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
१.	क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल का मध्यप्रदेश में परिचालन प्रदर्शन एक नजर में	10
2.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	11
3.	जिंदगी क्या है ?	12
4.	माँ	13
5.	एक चिन्तन	14
6.	आवासन एवं शहरी कार्य के संसदीय स्थायी समिति का दौरा	15
7.	मेरे मित्र मलय जैन, SP की जीवन की कहानी, एक लहर जो लाइफ बदल दे	17
8.	कार्यालयी हिन्दी राजभाषा मार्ग की बाधाऐं	19
9.	अतुलनीय जीवन	23
10.	संत कबीर के दोहे	25
11.	क्या से क्या हो गया देखते देखते	26
12.	भ्रमण यात्रा, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी - एक यादगार सफर	27
13.	बिटिया,खुश रहना ससुराल	31
14.	जीवन के मैले वस्त्र	32
15.	40 + हर रोज दस हजार कदम	33
16.	चिकित्सा शिविर	35
17.	बुरांश	37
18.	खुशी	38
19.	जीवन मधुरस से परिपूर्ण है	39
20.	पेड़ लगाओ जीवन बचाओ	40
21.	इंटरनेट एक जरूरत	41
22.	हडको ने मनाया 53वॉं स्थापना दिवस	43
23.	क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा वार्षिक खेल दिवस	44

क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल का मध्यप्रदेश में परिचालन प्रदर्शन एक नजर में

	संचयी प्रदर्शन	
1.	स्वीकृत योजनाएँ(आवसीय / शहरी अधोसंरचना	879/436
2.	पूर्ण की गई योजनाओं की संख्या	1301
3.	सम्मिलित शहरों की संख्या	147
4.	सम्मिलित संस्थओं की संख्या	390
5.	परियोजना लागत (राशि करोड़ में)	19249.82
6.	स्वीकृत ऋण (राशि करोड़ में)	8525.29
	-ग्रामिण विकास	6.86
	-शहरी आवास/ अन्य	2199.99
	-रैन बसेरा	2.26
	-भूमि अधिग्रहण	184.42
	-स्वच्छता (आई.एल.सी.एस.एवं आई.बी.एस.)	14.05
	-शहरी अधोसंरचना	6002.30
	-हडको निवास	115.41
7.	ऋण राशि अवमुक्त (राशि करोड़ में)	8456.08
	-आवसीय	2493.05
	-शहरी अधोसंरचना	5933.63
	-हडको निवास	29.40
8.	कुल रिहायशी इकाईयों की संख्या	201174
	-ई.डब्ल्यू.एस.	113910
	-एल.आई.जी.	40533
	- एम.आई.जी.	33725
	-एच.आई.जी.	11239
	-हडको निवास	1767

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा सुश्री दीक्षा रावत, योग अनुदेशक को आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा अपने अनुभवों व ज्ञान द्वारा हडको के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योग का महत्व बताते हुए विभिन्न प्रकार की योग की क्रियाओं को बड़ी सुगमता से समझाकर करवाया गया।

योग दिवस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ :

जिंदगी क्या है ?

शानुज गुप्ता
क्षेत्रीय प्रमुख

गुलजार साहब ने कितनी खूबसूरती से बता दिया कि ....

कभी तानों में कटेगी,
कभी तारीफों में;
ये जिंदगी है यारों,
पल पल घटेगी!!

पाने को कुछ नहीं,
ले जाने को कुछ नहीं
फिर भी क्यों चिंता करते हो,
इससे सिर्फ खूबसूरती घटेगी,
ये जिंदगी है यारों,
पल पल घटेगी!!

बार-बार रफू करता रहता हूँ ,
...जिन्दगी की जेब ;
कम्बखत फिर भी
निकल जाते हैं.......
खुशियों के कुछ लम्हें!!

जिन्दगी में सारा झगड़ा ही.........,
ख्वाहिशों का है;
ना ता किसी को गम चाहिए,
ना ही किसी को कम चाहिए !!

खटखटाते रहिए दरवाजा..........
एक दूसरे के मन का;
मुलाकातें ना सही,
आहटें आती रहनी चाहिए!!

उड़ जाएगें एक दिन.....
तस्वीर से रंगो की तरह,
हम वक्त की टहनी पर ....
बैठे है परिंदो की तरह!!

बोली बता देती है, इंसान कैसा है,
बहस बता देती है ज्ञान कैसा है;
घमण्ड बता देता है, कितना पैसा है,
संस्कार बता देते है, परिवार कैसा है !!

ना राज है .... जिन्दगी,
ना नाराज है .... जिन्दगी,
बस जो है, वह आज है जिन्दगी

जीवन की किताबों पर,
बेशक नया कवर चढ़ाइये
पर..... बिखरे पन्नों को
पहले प्यार से चिपकाइये !!

अशोक पटेल
संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

सच कहते हैं कि जिंदगी मिलना न आसां हैं,
हाँ, जिसने मुझे जिंदगी दी वो मेरी माँ है।
जब पहली बार देखा था उसको
तो उसका चेहरा खिला था
आँखों में मेरे ऑसू थे कि
मेरे रूप में उसे एक बेटा मिला
जब में हंसु तो हँस देती है
जब में रोऊँ तो रो देती है।
इतनी भी समझ न थी , माँ क्या होती है
न हाथ से निवाला उठाया जाता था
न पैर से खुद चला जाता था।

माँ की अहमियत का
मुझे तब पता लग जाता था
रोना तो मेरे लिए बहुत
आसान होता था
तब आँसु पोछने के लिए
उसी का हाथ आगे आता था
जो बड़ा हुआ तो लगा
रिश्ते भी बहुत होते हैं
लेकिन हर रिश्ते
मॉं के बाद ही होते है।

एक चिन्तन

एच.आर. गायधनी
संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

मैंने एक फूल से कहा. ..!
कल तुम मुरझा जाओगे
फिर क्यों मुस्कुराते हो?
व्यर्थ में
यह ताजगी किसलिए लुटाते हो?

फूल चुप रहा -
इतने में एक तितली आई
पल भर आनंद लिया, उड़ गई,

एक भौंरा आया
गान सुनाया, सुगंध बटोरी,
और आगे बढ गया,

एक मधुमक्खी आई
पल भर भिनभिनाई
पराग समेटा,
और झूमती गाती चली गई,

खेलते हुए एक बालक ने
स्पर्श सुख लिया, रूप-लावण्य निहारा,
मुस्कुराया और खेलने लग गया|

तब फूल बोला - मित्र
क्षण भर को ही सही
मेरे जीवन ने कितनों को सुख दिया
क्या तुमने भी कभी ऐसा किया?
कल की चिन्ता में
आज के आनंद में विराम क्यो करूँ!

माटी ने जो रूप, रंग, रस, गंध दिए
उसे बदनाम क्यो करूँ!

मैं हँसता हूँ
क्योंकि हँसना मुझे आता है,

मैं खिलता हूँ
क्योंकि खिलना मुझे सुहाता है,

मैं मुरझा गया तो क्या
कल फिर एक नया फूल खिलेगा
न कभी मुस्कान रुकी हैं,
न......ही || सुगंध ||

जीवन तो एक सिलसिला है
इसी तरह चलेगा |

“जो आपको मिला है उस में खुश रहिये और प्रभु का शुक्रिया कीजिए ,क्योंकि आप जो जीवन जी रहे हैं वो जीवन कई लोगों ने देखा तक नहीं है। "
“खुश रहिये और मुस्कुराते रहिये |”

आवासन एवं शहरी कार्य अध्ययन हेतु संसदीय स्थायी समिति का दौरा

आवासन एवं शहरी कार्य के संसदीय स्थायी समिति (2022-23) द्वारा अध्ययन दौरे के दौरान दिनांक 18 से 21 जनवरी 2023 को इंदौर में दौरा किया गया। इस संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह (लोकसभा) के साथ नौ लोकसभा सांसद और सात राज्यसभा सांसद एवं लोकसभा सचिवालय के अधिकारियों ने भाग लिया। समिति द्वारा राज्य सरकार के अधिकारियों, हडको (HUDCO) , एन. बी. सी. सी. (NBCC) , सी.पी.डब्लयू.डी.(CPWD), एन.एच.बी.(NHB), बैंक ऑफ इण्डिया (Bank Of India), सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया (Central Bank of India) के साथ (i) स्मार्ट सिटी मीशन(Smart City Mission), (ii) अटल नवीकरण और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) (AMRUT) (iii) स्वच्छ भारत मिशन -शहरी (Swacchh Bharat Mission- Urban (SBM-U)) (iv) प्रधान मंत्री आवास योजना (शहरी) का मूल्यांकन (Evaluation of Pradhan Mantri Awas Yojana (Urban)) (v) दीन दयाल अंत्योदय योजना (DAY-NULM) (vi) सी.पी.डब्लयू.डी. (CPWD) एन.बी.सी.सी. (NBCC) और हडको (HUDCO) के काम काज की समीक्षा करना (Reviewing Functioning of CPWD, NBCC and HUDCO) (vii) शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर और गुणवत्ता में सुधार- वायु गुणवत्ता, सीवेज ट्रीटमेंट और जल निकासी व्यवस्था, यातायात प्रबंधन (Improving Standard and quality of living in Urban Areas- Air Quality, Sewage Treatment & Drainage System, Traffic management and) (viii) प्रधान मंत्री स्वनिधि योजना (PMSVANidhi) पर चर्चा की गई।

श्री डी.गुहन, निदेशक (वित्त) संसदीय समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए।

इस अवसर पर हडको मुख्यालय का प्रतिनिधित्व श्री डी.गुहन, निदेशक (वित्त), श्री सुरेन्द्र कुमार, महाप्रबंधक (परि.) एवं क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल से श्री के.के.चौहान, क्षेत्रीय प्रमुख और सहभागी अधिकारियों ने भाग लिया।

इंदौर दौरे के दौरान हडको मुख्यालय से आए अधिकारी एवं क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों द्वारा श्री नीरज मण्डलोई, आई.ए.एस. प्रमुख सचिव, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग एवं श्री शंकर लालवानी मध्य प्रदेश के सांसद (लोकसभा) जो कि इस स्थायी समिति के सदस्य है, के साथ हडको द्वारा मध्य प्रदेश राज्य के विकासात्मक गतिविधियों में वित्त पोषण की संभावनाओं पर चर्चा की गई।

हडको के निदेशक(वित्त) द्वारा हडको की गतिविधियों पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। प्रस्तुतीकरण के दौरान संसदीय स्थायी समिति द्वारा प्रदान की गई बिंदुओं की सूची पर हडको द्वारा दिए गए उत्तरों पर भी चर्चा की गई।

❖❖❖❖

मेरे मित्र मलय जैन, SP के जीवन की कहानी

एक लहर जो लाइफ बदल दे

आनंद सोनी
उप महाप्रबंधक (वित्त)

दसवीं बारहवीं के परिणाम आते ही आंखों के सामने अपना कल आ ही जाता है। अरसा गुजर गया कानों में फेल... फेल ... फेल के शब्दों को गूंजे। तब हम कॉलेज में एडमिशन की सूची में अपना नाम खोजते थे वह भी नीचे से और नाम है कि मिलने का नाम ही नहीं लेता था। लेता भी कैसे , हमने विषय के नाम पर जो ले रखा था , वह विष से भी भयानक था। उसका नाम ही गणित था जो हमारे हिसाब से देवगण के भी वश की बात नहीं थी। हम तो साधारण मनुष्य थे जिसने ' कला ' सिर्फ़ और सिर्फ़ इसलिए नहीं लिया था क्योंकि कला वालों के साथ तब भेदभाव काले गोरों जैसा किया जाता था। उस छोटे से कस्बे में गोरों की जमात में आने के लिये बस दो ही विषय थे , एक बायोलॉजी और दूसरा गणित। आप ही सोचिये , एक दुबला पतला बालक, जो छिपकली को देख ऐसे छिप जाये कि छिपकली को ही अपने आप पर शर्म आने लगे , वह भला मेंढक को कैसे छूता ! और क्यों अकारण उनकी जान लेकर उस ज़माने में बड़ी सहजता के साथ चलने वाले क्रूरता के उस आम खेल और अखिलभारतीय मूर्खता में शामिल होता ? अब ले देकर वही बची थी , गुर्राती हुई गणित जो हमारी छाती पर ऐसे सवार हुई थी कि वेताल भी विक्रम के ऊपर सवार न हुआ होगा। हम सवालों और हिसाब किताब के बियाबान में भटकते और गणितिया वेताल हमसे नित नए सवाल पूछता , " बता , A अलाना है और B फलाना तो C का फल क्या होगा ...... " बता , अल्फ़ा की वैल्यू ऐसी है और बीटा की वैसी तो गामा की कैसी होगी।"

हम मन में चीखते , ' तेरी ऐसी की तैसी जैसी होगी ' मगर बोल न पाते। गणित के अविष्कारक की बुद्धि को कोसते, ' जब माईनस माईनस प्लस है तो प्लस प्लस माइनस क्यों नहीं बनाया तूने कम अक्ल? '

मैं क्लास के बाहर घुटनों के बल बैठ गणित के गोरेपन की सज़ा पाता और ख़ुद को कोसता, इससे तो कला का कालापानी ही ठीक होता। उस पल को कोसता कि हाय, क्यों गणित के विषयलोभ में पड़ा? कला ही ले लेता। इतिहास भूगोल पढ़ लिया होता और वह भी नहीं तो हारमोनियम तबला ही बजा लेता, मगर इस तरह अपनी खोपड़ी पर तबला न बजवाता। वेताल बन गणित गुर्राती, बता ..बता ..बता और इसके पहले कि वह बोलती, बता वरना तेरे सर के टुकड़े टुकड़े कर दूंगी, मेरी खोपड़ी के टुकड़े हो जाते। अड़ियल अलजेब्रा, कलमुँही कैलकुलस और टुच्ची ट्रिग्नोमेट्री के षड्यंत्रों ने ग्यारहवीं में मुझे पास भी न होने दिया। जब बाकी संगी साथी अगली क्लास में जाने कमर कस चुके होते, मैं झुकी कमर के साथ सप्लीमेंट्री मैं शामिल होने एलिमेंट्री मैथ्स के साथ सर पीट रहा होता। मैं सवालों के अरण्य में भटक रहा होता, रो रहा होता लेकिन उस अरण्य रुदन को सुनने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं ही था। ग्यारहवीं जैसे तैसे पास हुई। अब आगे जो सब कर रहे थे , वही करना था मुझे भी। इंजीनियरिंग के लिए pre engineering test यानी PET नाम के महाभूत से लड़ना था। इस महाभूत का भी एक सर नहीं, फ़िजिक्स, कैमिस्ट्री और मैथ्स नाम के तीन तीन सर थे जो मुझे डराते, अट्टहास करते। तब निगेटिव मार्किंग भी थी आज ही की तरह। मुझे किसी ज्ञानी ने सलाह दी थी कि डरना मत, पॉजिटिव होकर पेपर देना। मैं डरा नहीं और आँख मूँदकर चार विकल्पों में से कभी A तो कभी B , कभी C तो कभी D को इस पॉजिटिव भावना के साथ टिक करता रहा कि जो होगा तो सही ही होगा। मगर क्या कहूँ , आप सुनकर हँसेंगे। कॉपी जाँचने वाला कमबख्त कितना निगेटिव था कि उसने निगेटिव मार्किंग के नाम पर मेरा एक एक अंक काट लिया। यार, जैसे चुड़ैल सात घर छोड़कर वार करती है , दीमक भी सात पुस्तक छोड़कर चाटती होगी। निगोड़ी निगेटिव मार्किंग ने तो मेरे सारे नम्बर चाट लिए और गणित में मुझे तीन सौ में शायद दस बारह नम्बर भी नहीं मिले। यही हाल फिजिक्स का था और कैमिस्ट्री का शायद उससे भी बुरा। इंजीनियरिंग तो गई हाथ से। अब पीसीएम नाम के तीन मुंड गले में लटकाकर आगे बढ़ने बस एक ही

विकल्प था और वो था, बीएससी करना।

हमने साइंस कॉलेज में एडमिशन के लिये एड़ियां घिसनी प्रारंभ कीं। रायपुर के साइंस कॉलेज में एक के बाद एक सूची पर सूची निकलतीं और हम नीचे से अपना नाम तलाशते रह जाते। रब जाने, बन्द गली के आख़िरी मकान की तरह एडमिशन बन्द होते होते एकदम आख़िरी में हमें मक़ाम मिला, न जाने किस चमत्कार से हमें भी एडमिशन मिला और हम बीएससी की फर्स्ट ईयर के होनहार विद्यार्थी कहलाये। मगर होनहार बिरवान के होत चीकने पात यहां वैसे चीकने नहीं थे। हमारे लिए पात यहाँ भी उतने ही कँटीले और नुकीले थे और वही हुआ जो होनी को मंजूर था। हम, होनहार होकर होनी के आगे यहां भी हार गए। फ़ेल फ़ेल फ़ेल की गूंज एकदम फ़िल्मी ढंग से हमारे कानों में गूंजने लगी और हम भी फ़िल्मी परम्परा में दोनों हाथों को कानों पर रखे नहीं ...नहीं ...नहीं .....चीखते सत्य को झुठलाने का यत्न करते घर लौटे। कई ऐसे वैसे विचार मन में आये। कई फैंटेसी दिमाग़ में जन्मीं मगर हम सबको झटक, मुँह को लटकती हालत में ले घर आ गये। वह दिन था और वह समय .... वह दृश्य जो आज भी मुझे नहीं भूलता। मज़बूत इरादों वाले मेरे आदर्श, मेरे पिता (श्री देवेंद्र जैन) की आँखों में जीवन में पहली बार आँसू तैरते देखे थे मैंने। उन्हें हताश होते देखा था मैंने पहली बार, वो भी मेरी वज़ह से ! तब एक आवाज़ आई, जिसने उस सूखती नदिया की धारा ही मोड़ दी, " छोड़ो, तुमसे न होगा यह मैथ्स वैथ्स, अब बीकॉम ट्राय करो।" यह आवाज़ थी मेरे चाचाजी (श्री जैनेंद्र जैन) की और तब मैंने वाणिज्य नाम की उस गइया की पूंछ थाम विषय की वैतरणी पार करने की ठान ली। समय बीतते बीतते पता न चला कि खसरा खतौनी, एकाउंटेंसी जैसे अबूझ विषय कब मेरे जी को रुचने लगे और मैं पिछली बेंच दर बेंच फलाँगता सबसे आगे की बेंच पर ठाठ से बैठने लगा। मैं दंग रह गया ये देखकर कि सब कुछ कैसे बदल गया था। मैं दंग था कि कल तक कटखनी कैलकुलस मुझे खाने दौड़ती थी और आज उसी की तरह कठिन स्टेटिस्टिक्स के कठिन सवालों से मैं कैसे मज़े लेता खेल रहा था। कैसे टैक्सेशन के उलझे सवाल मैं बड़े विश्वास के साथ सुलझा रहा था और मेरे सहपाठी प्रशंसा भरी निगाहों से मुझे देख रहे थे। मैं दंग था यह देखकर कि कभी अपना नाम सबसे नीचे खोजता था, अब मैं अपनी क्लास या कॉलेज ही नहीं, यूनिवर्सिटी की मेरिट में भी अपना नाम सबसे ऊपर देख पा रहा था। मैं दंग था कि कैसे एक गलत विषय की राह को छोड़ दूसरी राह पकड़ी और भविष्य का एक नया रास्ता ही खुलता चला गया मेरे लिये और वरदी पहन, बहुत आला तो नहीं, फिर भी ठीकठाक नौकरी में आज आपके सामने हूँ और थोड़ा बहुत लिख पढ़ भी रहा हूँ।

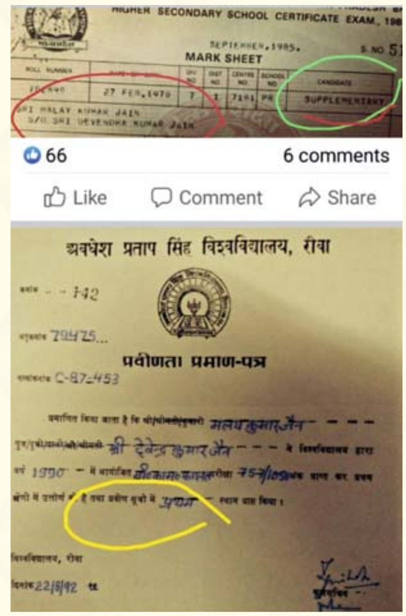

आप सोचते होंगे, यह किस्सा किसलिए ? दोस्तो, यह सही है कि मेरा किस्सा बहुत मामूली सा उदाहरण है और ऐसे किस्से भरे पड़े हैं चारों ओर। यही मैं भी कहना चाहता हूँ कि ऐसे एक नहीं, अनगिनत उदाहरण हैं उन बच्चों के लिये जो दसवीं बारहवीं के रिज़ल्ट पर आज अपनी आँखों के आगे अँधेरा और नैराश्य का समन्दर पा रहे होंगे। कितनों के पिता की आंखों में आँसू छलक रहे होंगे और कितनों के कदम कुछ ग़लत का निर्णय ले, उठने को होंगे। उन बच्चों से है मेरा आव्हान कि तुम्हारे साथ भी यदि ऐसा कुछ घट गया हो, नम्बर घट गये हों या कोई सपना ही टूट गया हो तो बच्चे, बस एक गोली धैर्य की और एक गोली विवेक की तुरंत निगल जाओ , तुम देखोगे, ऊंचाई बढ़ाने या तीस दिन में वज़न घटाने वाली दवाइयों का असर हो न हो, इन दो गोलियों का असर ज़रूर होगा। ज़रूरी नहीं, मैथ्स तुमसे न चले तो दुनिया में और कुछ नहीं चलेगा तुमसे। हर व्यक्ति के भीतर अपार खूबियां हैं और आज जितने अवसर तुम्हारे सामने हैं, उतने पहले कभी नहीं रहे।

तो यदि फेल...फेल...फेल जैसा कुछ तुम्हारे कानों में भी गूंज रहा हो , कुछ ऐसा वैसा मन में पल रहा हो तो ठहर जाओ। दसवीं या बारहवीं में कम नम्बर आ जाना या फ़ेल ही हो जाना बहुत फ़र्क नहीं डालेगा जीवन में। जीवन के विशाल समन्दर में कौन सी लहर कब तुम्हें ऊपर उछाल तुम्हारी लाइफ बदल दे और तुम आसमान को छू लो, पता नहीं। तुम ख़ुद दंग रह जाओगे।

कार्यालयी हिन्दी

राजभाषा मार्ग की बाधाऐं

मनोज कुमार पाण्डेय
सहायक महाप्रबंधक (विधि)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और 'भाषा' समाज के सदस्यों के बीच संपर्क एवं संवाद का माध्यम बनती है। बिना संपर्क और संवाद के कोई भी समाज जीवंत नहीं माना जा सकता अर्थात् बिना भाषा के किसी भी समाज का अस्तित्व संभव ही नहीं है। आपस में सम्पर्क और संबंध बनाए रखने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा से ही मनुष्य अपना जीवन सुगम बनाता है।समाज के बीच संवाद-सम्प्रेषण भाषा का प्राथमिक कार्य है। समाज तथा इसके सदस्यों के अस्तित्व और चरित्र के अनेक आयाम होते हैं और इन सभी आयामों के संदर्भ में भाषा की विशिष्ट भूमिका होती है।

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। भारत में विभिन्न भाषाओं में संवाद होता है। अलग-अलग क्षेत्रों में भाषा का रूप भी बदलता है। इन सभी भाषाओं की अपनी एक यात्रा रही है लेकिन भारतीय समाज की सम्पर्क भाषा 'हिन्दी' ने जहाँ वैदिक संस्कृत से यात्रा करते हुए आधुनिक हिन्दी का स्वरूप ग्रहण किया है वह एक सामाजिक क्रिया का आधार है। समाज निरन्तर अपने विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास करता है। समाज में होने वाले परिवर्तन की तरह ही उसकी अपनी भाषा में भी कभी स्थैर्य नहीं रहा। इसीलिए निरन्तर परिवर्तनों की धार पर चलकर हिन्दी अपने अनेक रूपों के साथ वर्तमान में समाज के सम्मुख उपस्थित है। हिन्दी की प्रयोजनीयता के आधार पर उसके विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

1. साहित्यिक हिन्दी
2. कार्यालयी हिन्दी/ जनसंचार के माध्यमों की हिन्दी/ वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी
3. व्यावसायिक हिन्दी
4. विधिपरक हिन्दी
5. सामाजिक हिन्दी

कार्यालयी हिन्दी अपने आप में एक व्यापक अर्थ की अभिव्यक्ति रखता है। व्यावसायिकक्षेत्र हो अथवापत्रकारिता का या विज्ञान और तकनीकी का क्षेत्रसभी क्षेत्रों से सम्बद्ध कार्यालयों में काम करने वाले व्यक्ति एक तरह से कार्यालयी हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए कार्यालयी हिन्दी अपने-आप में व्यापक अर्थ की अभिव्यंजना रखती है।

कार्यालयी हिन्दी का अभिप्राय

दैनिक जीवन में मनुष्य जिस भाषा का प्रयोग करता है वह मौखिक व बोलचाल की भाषा होती है। वैसे तो भाषा के प्रत्येक रूप में 'मानकता' का निर्वाह होना आवश्यक है लेकिन बोलचाल की भाषा में यदि मानकता का प्रयोग नहीं भी किया जाता तब भी वह सामाजिक जीवन में लगातार प्रयोग में अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त आधार रहती है। इसी तरह सांस्कृतिक संदर्भ में भाषा का रूप लोकगीतों में जिस प्रकार होता है वह मौखिक परम्परा के कारण मानकता का निर्वाह भले ही न करती हो लेकिन हमारी सांस्कृतिक अस्मिता को संजोए रखने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी तरह साहित्यिक हिन्दी का स्वरूप जहाँ अपनी परिनिष्ठता के कारण अपनी अलग पहचान रखता है वहीं आंचलिक साहित्य में क्षेत्रीतया के प्रभाव के कारण साहित्यिक हिन्दी एक नए रूप में भी हमारे सामने आती है। इसलिए साहित्यिक हिन्दी का रूप भी पूर्णतः निर्धारित नहीं किया जा सकता।

वर्तमान दौर में तकनीकी के आगमन के बाद जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में हिन्दी का वर्चस्व तेजी से बढ़ने लगा है। जनसंचार के इन माध्यमों की हिन्दी सामान्य बोलचाल के निकट होती है। इसका कारण है कि जनसंचार का मुख्य उद्दश्य समाज के विशाल वर्ग तक सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सूचना को सम्प्रेषण करना है और भारत जैसे विशाल राष्ट्र में सरल और सुबोध भाषा के द्वारा ही विशाल जनसमुदाय तक अभिव्यक्ति सम्भव हो सकती है। इसीलिए जनसंचार के माध्यमों में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग कियाजाता है।

इन रूपों के अतिरिक्त व्यापार, वाणिज्य, विधि, खेल आदि अनेक क्षेत्रों में हिन्दी के रूप पारिभाषिक के साथ-साथ स्वतंत्र भी थे। इन क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट भाषा के कारण इसका प्रयोग सीमित रूप में ही किया जा सकता था। इन क्षेत्रों से सम्बन्धित लोगों में ही इस भाषा के अर्थ को समझने की क्षमता होती है। लेकिन इन क्षेत्रों में हिन्दी का मानकीकृत रूप ही स्वीकार्य होता है।

हिन्दी के इन विभिन्न रूपों और अनेक अन्य रूपों में भाषा का जो स्वरूप होता है वह कार्यालयी हिन्दी में प्रयुक्त नहीं होता। कार्यालयी हिन्दी इससे भिन्न पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करके चलती है। कार्यालयी हिन्दी सामान्य रूप से वह हिन्दी है जिसका प्रयोग कार्यालयों के दैनिक कामकाज में व्यवहार में लिया जाता है। "सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होनें वाली भाषा को प्रशासनिक हिन्दी या कार्यालयीन हिन्दी कहा जाता है। हिन्दी का वह स्वरूप जिसमें प्रशासन के काम में आने वाले शब्द, वाक्य अधिक प्रयोग में आते हों।

इन सरकारी कार्यालयों में केन्द्र अथवा राज्य सरकारों के अपने अथवा उनके अधीनस्थ आने वाले विभिन्न मंत्रालय तथा उनके अधीन आने वाले संस्थान, विभाग अथवा उपविभाग एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि को शामिल किया जाता है। सरकार का कोई भी कार्यालय, चाहे वह उसकी अधीनस्थ हो अथवा सम्बद्ध हो, वह सरकारी कार्यालय ही कहा जाएगा। इसलिए इन कार्यालयों के कामकाज में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी को कार्यालयी हिन्दी का जाता है।

"कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप"

संवैधानिक रूप से कार्यालयी हिन्दी के लिए 'राजभाषा हिन्दी'का प्रयोग किया जाता है। इसलिए कार्यालयी हिन्दी के उद्देश्य को समझने के लिए राजभाषा हिन्दी तथा उसके संवैधानिक प्रावधानों को जानना आवश्यक है। इसका तात्पर्य 'राज' की भाषा से है। 'राज की भाषा' से यहाँ अभिप्राय राज-काज की भाषा, प्रशासन की भाषा, सरकारी काम-काज की भाषा या कार्यालय की भाषा से है।

यह विदित ही है की हिन्दी भाषा पिछले एक हजार वर्षो में भारत की प्रधान भाषा रही है। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने सबसे पहले राजकाज के लिए हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया था क्योंकि उस समय तक भारत की जनता अंग्रेजी नहीं जानती थी। लेकिन धीरे-धीरे अंग्रेजी भाषा को वर्चस्व की भाषा बनाने तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति आकर्षित करने के लिए सन् 1835 ई. में लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी को शासन की भाषा के रूप में स्थापित किया। मैकाले की उस नीति का ही परिणाम रहा कि भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राजभाषा के लिए हुई बैठक में हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का नाम भी चर्चा में रखा गया। लेकिन गांधी जी किसी भी तरह से अंग्रेजी के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने खुले तौर पर हिन्दी को राजभाषा बनाने का समर्थन किया। किन्तु अंग्रेज सरकार के पिट्ठू रहने वाले अनेक राजनीतिज्ञों ने भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी के साथ ही अंग्रेजी को भी रखा।

सन् 1947 में संविधान सभा के गठन के बाद से ही राजभाषा पर चर्चा की जाने लगी। उस समय हिन्दुस्तानी या अंग्रेजी में से किसी एक को राजकाज की भाषा बनाने पर बहस हुई। बाद में 'हिन्दुस्तानी' केस्थान पर 'हिन्दी' शब्द को रख दिया गया। लम्बे समय तक चली बहसों के बाद आखिरकार 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

उसी दौरान उस प्रावधान में यह भी सम्मिलित कर दिया गया कि अंग्रेजी पन्द्रह वर्षों तक हिन्दी की सह-राजभाषा के रूप में काम करती रहेगी।

अनुच्छेद343 - संघ की राजभाषा:

1. संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।
2. खण्ड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।
3. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा,
   (क) भाषा का या(ख) अंकों के देवनागरी रूप का

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपवन्धित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाये।

"अनुच्छेद 345 राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ" - किसी राज्य का विधान-मण्डल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिन्दी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार किया जा सकेगा। परन्तु जब तक राज्य का विधान-मण्डल, विधि द्वारा अन्यथा उपबन्ध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

"अनुच्छेद 348 उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों,विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा"

1. इस भाग के पूर्वगामी उपबन्धों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा, उपबन्ध न करें तब तक:-

(क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी भाषा में होंगी।

(ख) (i) संसद के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मण्डल के सदन या प्रत्येक सदन में पुनः स्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के, (ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मण्डल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और (iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मण्डल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

"अनुच्छेद 351 हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश"

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा मार्ग की बाधाऐं

भारत एक विशाल राष्ट्र है जिसकी अधिकांश जनता हिन्दी भाषी है और शासन के साथ उसका सीधा सम्बन्ध स्थापित करने

के लिए सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी से बेहतर कोई भाषा हो ही नहीं सकती। इसलिए राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा को रखना और राजभाषा प्रावधानों के अनुसार अन्य क्षेत्रों में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार द्वारा उसे राष्ट्रीय और वैश्विक बनाना इसका वास्तविक उद्देश्य रहा। लेकिन राजभाषा सम्बन्धी संवैधानिक प्रावधानों में अनेक उपबन्धों द्वारा अंग्रेजी को पन्द्रह वर्षों और उसके उपरान्त निरन्तर सह-राजभाषा बनाए रखना हिन्दी के लिए अहितकारी हुआ।उसे अभी तक वह सम्मान प्राप्त नहीं हो सका जो वास्तव में किसी एक राष्ट्र की प्रधान भाषा को मिलना चाहिए।वास्तव में राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करने के पीछे आरम्भिक उद्देश्य भी यही था कि भारत के सभी शासकीय कार्य 'कार्यालयी हिन्दी' के माध्यम से इसलिए किए जायें जिससे भारत की अधिकांश जनता शासन द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णयों से परिचित हो सके। विश्व के कई ऐसे देश हैं जिनकी जनसंख्या भारत के एक छोटे से राज्य की जनसंख्या से भी बहुत कम है, किन्तु उन राष्ट्रों ने अपनी राष्ट्र की प्रधान भाषा को ही अपने काम-काज की भाषा में प्रयोग में लिया, जिससे वहाँ का शासन-तंत्र एक ओर तो समाज से सीधे संवाद कर पाने में सक्षम हुआ वहीं दूसरी ओर समाज भी अपनी भाषा में ही सरकार द्वारा बनाए गए नियमों और प्रावधानों को सहजता से समझ पाने से अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए।भारत में इसके विपरीत स्थिति आज तक बनी हुई है। ऐसे राज्यों में जहाँ उस राज्य की कार्यालयी भाषा हिन्दी है वहाँ भी अभी तक उच्च पदों पर अंग्रेजी मानसिकता वाले लोगों का आधिपत्य है। ऐसे में न तो अपने अधिकारों को जान पाते हैं और न हीं शासन से सीधा संवाद कर पाते हैं।

इतना ही नहीं, भारत के न्यायालयों को अंग्रेजी में कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई। यह दुर्भाग्य ही है कि भारत में विधि के क्षेत्र में हिन्दी की जितनी उपेक्षा की गई उतनी किसी अन्य क्षेत्र में नहीं। अधिकांश न्यायालयों में वादप्रस्तुत किए जाने और होने वाली बहसें आज भी अंग्रेजी में होती है। अपने-अपने वाद के सम्बन्ध में वादी या प्रतिवादी को यह भी नहीं पता चल पाता कि न्यायालय में प्रस्तुत उसके वाद को अधिवक्ता द्वारा कितनी मजबूती से प्रस्तुत किया है और उसने उस वाद को उसके पक्ष में प्रस्तुत किया भी है अथवा नहीं यह भी विचार का विषय हो सकता है। ऐसे में न्यायालयों में यदि काम-काज की भाषा हिन्दी होती तो निश्चित रूप से समाज के आम नागरिक को अपने वाद के समय अपने अधिवक्ताओं द्वारा रखे जाने वाले तर्कों की जानकारी पूर्ण रूप से मिल सकती और वह अपने लिए उचित न्याय की आशा कर सकता।

जिस समय राजभाषा सम्बन्धी प्रावधानों को रखा गया था उस समय उसमें यह भी सुनिश्चित किया गया कि जहाँ भी राजभाषा हिन्दी में कार्य करते हुए कर्मचारी को परेशानी का सामना करना पड़े वहाँ अंग्रेजी के शब्दों को यथावत् देवनागरी में लिख सकता है। चूँकि प्रशासन की अपनी सुनिश्चित शब्दावली होती है ऐसे में अंग्रेजी के अनेक शब्दों का अनुवाद सम्भव ही नहीं हो सकता। इसीलिए उन शब्दों के स्थान पर किसी अन्य शब्द की अपेक्षाकृत अंग्रेजी के शब्द को देवनागरी में लिप्यंतरित कर उसका प्रयोग किया जा सकता है जिससे सामान्य व्यक्ति उस पत्र के मंतव्य को समझ सके।

इसलिए देखा जाए तो कार्यालयी हिन्दी का वास्तविक उद्देश्य समाज के बहुसंख्यक वर्ग तक शासन की नीतियों को सहज रूप से पहुँचाते हुए सामान्य नागरिक को उनके अधिकारों के प्रति जानकारी देना; शासन और प्रजा के बीच सीधा-संवाद स्थापित करना तथा राष्ट्र के विकास में सामान्य नागरिक की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करना है।

प्रारम्भ में संविधान लागू होते समय सन् 1950 में यह समय सीमा 15 वर्ष के लिए थी अर्थात अंग्रेजी का प्रयोग सरकारी कामकाज के लिए सन् 1965 तक ही हो सकता था, किन्तु बाद में संविधान संशोधन के द्वारा इस अवधि को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया गया। यही कारण है कि संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित किये जाने पर भी केन्द्र सरकार का अधिकांश सरकारी कामकाज अंग्रेजी में हो रहा है और वह अभी तक अपना वर्चस्व बनाए हुए है।अंग्रेजी संविधान द्वारा भले ही किसी राज्य की राजभाषा स्वीकृत न की गई हो, किन्तु व्यावहारिक रूप में उसका प्रयोग एक बहुत बड़े सरकारी कर्मचारी वर्ग द्वारा सरकारी कामकाज के लिए किया जा रहा है।लेकिन विभिन्न संशोधनों और आपसी असहमतियों के कारण संवैधानिक रूप से हिन्दी 'राजभाषा' होते हुए भी अंग्रेजी ही शासन व्यवस्था की भाषा बनी हुई है।

❖❖❖❖

अतुलनीय जीवन

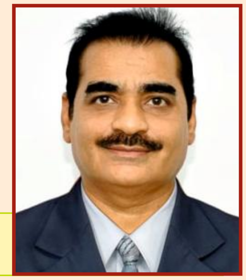

धर्मेन्द्र कुमार मोटवानी
वरि.प्रबंधक (सचि.-रा.भा.)

हार हो जाती है जब मान लिया जाता है ।
जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है ।।

यदि हमें सुखी जीवन जीना है तो हमें दूसरों से तुलना नहीं करनी चाहिए। जब भी आप दूसरों से तुलना करोगे तभी आप ओवरथिंकिंग के शिकार हो जाओगे। अगर दूसरा व्यक्ति आपसे नीचे लेवल का है आप तो मन में खुशी होगी और आप इस खुशी में आलसी जीवन जीने लगोगे। यदि तुलना करने वाले व्यक्ति आपसे ऊपर लेवल का है तो फिर आप अपने आप को नेगेटिव सोच में डाल दोगे। दोनों ही स्थिति हम सभी के जीवन के लिए नुकसानदायक है। हमें अपने वर्तमान स्थिति से संतोष करना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि हमें आगे बढ़ने के लिए प्रयास नहीं करनी चाहिए। जिस प्रकार **चिंता** और चिंतन दोनों शब्द में अन्तर है। ठीक उसी प्रकार आलस और संतुष्टि दोनों में अंतर है। यदि आप अपने वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं तो हम आगे बढ़ने का प्रयास पूरे मन से करेंगे और उसमें **सफलता** भी मिलेगी। यदि आप अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं रहते हैं तो हमारा किसी भी अन्य कामों में मन नहीं लगेगा और हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

जब आप अपने वर्तमान स्थिति से संतुष्ट होंगे तभी आपके अंदर एक **आशावादी** विचार उत्पन्न होगा। जब आप अपनी जिंदगी से असंतुष्ट रहेंगे तो आप कोई भी नया विचार नहीं अपना सकते हैं।

मैं यहॉं एक पत्थर तोड़ने वाले की प्रेरणादायक कहानी शेयर कर रहा हूं जो सभी के लिए काफी लाभदायक हो सकती है। एक व्यक्ति रोज पत्थर तोड़ने का काम करता था। वह घर से थोड़ा दूर बड़े से पर्वत के पत्थर तोड़ता और अपना जीवन यापन करता। एक दिन उस व्यक्ति ने सोचा कि क्या मैं जीवन भर यही काम करता रहूंगा। क्या मेरी जिंदगी में कभी आराम नहीं मिलेगा?

उनके मन में एक असंतुष्टि की भावना उत्पन्न हो गया और वह अपने आप को कोसने लगा। असंतुष्टि की भावना के कारण उसे रातों में नींद आना बंद हो गया। वह हमेशा सोचने लगा कि मुझे बड़ा बनना है।

एक रात जब वह सो रहा था तो उसने एक सपना दिखाई दिया। जब वह पत्थर तोड़ने जा रहा था उसे रास्ते में एक बड़ा सा बंगला (बड़ा घर) दिखाई दिया। उन्होंने सोचा यह बंगला ही सबसे बड़ा है। यह मेरे पास होना चाहिए।

वह बहुत देर तक बंगला को देखता रहा। कुछ देर बाद एक व्यक्ति आया। जिसको सभी लोग फूलों का माला पहनाया और जय कार करने लगा। वह व्यक्ति कोई राजनेता था। उस पत्थर तोड़ने वाला ने सोचा कि यह बंगला तो बड़ा नहीं है। बड़ा तो वह व्यक्ति है जिसको सब इतना आदर सत्कार कर रहा है।

अब वह पत्थर तोड़ने वाला व्यक्ति सोचने लगा कि नहीं मुझे अब नेता बनना है। बंग्ला और नेता को धूप में खड़े होकर देखते-देखते पत्थर वाला पसीना से तरबतर हो गया। फिर

उसने ऊपर देखा उसे सूरज दिखाई दिया।
तब उसने सोचा कि सबसे बड़ा यह सूरज है। जो इतना ऊपर चमक कर सब को रोशनी दे रहा है। मुझे भी कितना पसीना से तर-बतर कर दिया। मुझे तो अब सूरज बनना है।
वह सूरज को देख ही रहा था तभी एक घना बादल आया और सूरज को ढक दिया। पत्थर तोड़ने वाला व्यक्ति ने सोचा यह बादल ही सबसे बड़ा है जो पूरे सूरज को ढक दिया।
वह व्यक्ति बादल को देख ही रहा था कि हवा का एक झोंका आया और बादल तो दूर लेकर चला गया। पत्थर तोड़ने वाला व्यक्ति देखता रह गया। यह क्या हो रहा है। हवा का झोंका बादल को उड़ा के चला गया। हमें तो हवा बनना चाहिए। क्योंकि हवा ही सबसे ताकतवर है।
यह बात वह पत्थर तोड़ने वाला व्यक्ति सोच ही रहा था की हवा एक एक पहाड़ से टकराया और हवा ने अपना दिशा मोड़ दिया। इस पहाड़ टस से मस नहीं हुआ। यानी पहाड़ में दम है। मुझे तो पहाड़ बनना है।
तभी वह देखा कि एक व्यक्ति आ रहा है और अपने हथौड़ा से उस पहाड़ को टुकड़ा कर रहा है। यह क्या हो रहा हैं? इतना बड़ा पहाड़ जो हवा के विशाल झोंके का रास्ता बदलने के लिए मजबूर कर दिया, टस से मस नहीं हुआ उसे एक छोटा सा व्यक्ति तोड़ा है।
व्यक्ति बार-बार सोच रहा था नहीं यह नहीं हो सकता। यह कभी नहीं हो सकता। मुझे पत्थर तोड़ने वाला नहीं बनना है।
उसकी आंखों के सामने आ रहा था कि एक व्यक्ति पहाड़ के टुकड़े-टुकड़े कर रहा है। उनकी आंखें खुल गई। फिर उसने सोचा मैं जो हूं, जिस हाल में हूं, मैं ठीक हूं। यानी सबसे बड़ा मैं हूं जो इस पहाड़ को तोड़ रहा हूं। **ईश्वर** ने आपको सबसे अलग बनाया है। आप दूसरे की नकल करके **ईश्वर** का अपमान ना करें।
इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे पास जो चीज उपलब्ध हैं हम उसकी इज्जत नहीं करते। हम हमेशा दूसरों को देखते हैं। उसके पास क्या है जो हमारे पास नहीं हैं। इसी चक्कर में हम असंतुष्ट और दीनहीन भावना महसूस करते हैं। यदि आपको जीवन में आगे बढ़ना है तो अपने आप को हमेशा **आशावादी** बनाए रखें। **आशा** ही जीवन है। आप जो है ठीक है। कुछ कमी है तो उसे दूर करने का प्रयास करें। ओवरथिंकिंग ना करें। कोई भी व्यक्ति एवं कोई भी पद 100% अच्छा नहीं होता। कुछ ना कुछ सबमें कमी जरूर होती है। हमें उस कमी को दूर करना चाहिए।
अर्थात जीवन में कभी भी किसी से तुलना मत करो क्योंकि आप जैसे भी हो, सर्वश्रेष्ठ हो

अनिल बर्वे
वरि. प्रबंधक (परियोजना)

संत कबीर के दोहे

संत कबीर के कुछ दोहे हम लोगों ने अनेक बार सुने हैं। कुछ ऐसे दोहे जो बहुत कम सुने गए एवं अध्यात्म के साधकों के लिए उपयोगी हैं यहाँ प्रस्तुत है:

सत्संगति है सूप ज्यों, त्यागै फटकि असार |
कहैं कबीर गुरु नाम ले, परसै नहीं विकार ||
भावार्थ: संतों का संग सूप के समान है जो साधक के निरर्थक विचारों को फटक कर अलग कर देता है। कबीर कहते हैं कि गुरु से ज्ञान लेने वाले के अंदर विकार पनपता नहीं है।

जीवन में मरना भला, जो मरि जानै कोय|
मरना पहिले जो मरै, अजय अमर सो होय ||
भावार्थ: अर्थात इससे पहले कि प्राकृतिक मृत्यु आप को मार दे जो साधक जीवित रहते हुए ही अहँकार, इच्छा वासना से मुक्त हो कर मरना जानता हो। मरने के पहले ही जो इस तरह मर लेता है, वह अजर-अमर हो जाता है जीवनमुक्त हो जाता है।

मैं जानूँ मन मरि गया, मरि के हुआ भूत |
मूये पीछे उठि लगा, ऐसा मेरा पूत ||
भावार्थ: अनेक वर्षों की तपस्या के बाद साधक सोचता है कि वह मन के विकारों से मुक्त हो गया है परन्तु मन बड़ा सूक्ष्म है और अचेतन में दबी पड़ी इच्छाओं के चलते वह कभी भी फिर से अपना जाल फेंक कर साधक को भ्रष्ट कर सकता है इस लिए साधक को इससे जागरूक रहना चाहिए।

भक्त मरे क्या रोइये, जो अपने घर जाय |
रोइये साकट बपुरे, हाटों हाट बिकाय ||
भावार्थ: प्रभु भक्ति में लीन ऐसे संत भक्त के शरीर छोड़ने पर क्या रोना जिसने अपने कल्याणरुपी अविनाशी घर को प्राप्त कर लिया, अफ़सोस तो बेचारे उन अभक्त - अज्ञानियों के मरने का करो, जो मरकर चौरासी लाख योनियों के बाज़ार में भटकते रहेंगे अर्थात जन्म लेते रहेंगे।

मैं मेरा घर जालिया, लिया पलीता हाथ |
जो घर जारो आपना, चलो हमारे साथ ||
भावार्थ: संसार - शरीर में जो मैं - मेरापन की अहंता - ममता हो रही है - ज्ञान का पलीता हाथ में लेकर इसे मैंने जला डाला। जिसे अपना अहंकार, वासना, अर्थात संसार से मुक्ति पानि हो वह मेरे साथ चले।

मन को मिरतक देखि के, मति माने विश्वास |
साधु तहाँ लौं भय करे, जौ लौं पिंजर साँस ||
भावार्थ: मन को मृतक अर्थात शाँत हुआ देखकर यह विश्वास न करो कि वह अब धोखा नहीं देगा। असावधान होने पर वह फिर से चंचल हो सकता है, इसलिए विवेकी संत तब तक मन से भयभीत रहते हैं, जब तक शरीर में **साँस** चलती है।

अजहुँ तेरा सब मिटै, जो जग मानै हार |
घर में झजरा होत है, सो घर डारो जार ||
भावार्थ: आज भी तेरा सब दुःख मिट सकता है यदि संसार से मोह का त्याग कर सको। तुम्हारे मनरूपी घर में जो काम, क्रोध, इच्छाओं आदि का झगड़ा हो रहा है, उसे ज्ञान की अग्नि से जला डालो।

❖❖❖❖

क्या से क्या हो गया

देखते देखते

विनय वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

.....अरे..... रूकिए। यहॉ संदर्भ प्यार का नहीं है बल्कि बीमारी का है। वो भी एक ऐसी बीमारी जो हमें हर जगह, चप्पे चप्पे में नजर आती है, अपने आईने में भी। जिसे हम तब तक नकारते हैं जब तक वे बीमारी गंभीर परिणामों में परिवर्तित नहीं जो जाती।

एकदम सही समझे आप, मैं बात कर रही हूं "मोटापे" की। कोई मोटा है या नहीं ये सिर्फ दिखने से नहीं निर्धारित होता। उसके लिए मापदंड होते हैं, जैसे कि BMI – (Body Mass Index) जोकि आपके वजन व Height से निकाला जाता है। यदि आपका 18.5–23 cm के बीच आता है जो आप Normal BMI के माने जाते हैं। (18–25cm for western countries) पर ये क्या, जैसे – जैसे Science advance हो रही है, वैसे – वैसे बीमारी भी। मै समझाती हूं कैसे ?

सिर्फ BMI अगर Normal हो तो भी हम मोटे हो सकते हैं, हमें Diabetes and Heart Disease का खतरा हो सकता है। इसी पहेली को सुलझाने के लिए एक नया मापदंड चलन में आया है जोकि बहुत ही कारगर साबित हो रहा है। उसे कहते हैं Waist Circumference अर्थात् आपकी कमर का नाप। सीधे खडे होकर सॉस छोडते हुए, यदि आपकी कमर का नाप जोकि नाभि के जस्ट उपर लिया गया हो वह नाप अगर आदमियों में 90cm के उपर या बराबर और औरतों में 80 cm के उपर या बराबर आए तो वह व्यक्ति मोटा कहलाता है। यानि की आप देखते ही देखते मोटापे से ग्रस्त हो सकते हैं, अनजाने में इस बीमारी का शिकार हो सकते हैं।

तो फिर क्या ? मोटापे के दुष्परिणामों के होने का इंतजार तो नहीं करेंगें ना। आपके हाथ एक ऐसी कुंजी लग गई जोकि आपके जीवन में सेहत की बहार ला सकती है। अपनी कमर का नाप लिजिए और अधिक आने पर उसे कम करने में लग जाइए।

मोटापे से होने वाली बीमारियों के बारे में हम सभी जानते हैं, जैसे कि Diabetes, Heart Disease, Cancers, Depression, Ageing etc. पेट के उपर वाली चर्बी सबसे ज्यादा हानिकारक होती है।

जरूरत से अधिक केलोरिज खाना, पैक्ड नमकीन, बिस्किट, रस्क, ब्रेड ईत्यादि का रोजाना सेवन करना, रोजाना मीठा खाना चाहे वह चाय या कॉफी के माध्यम से ही क्यों न हो, अधिक समय तक बैठे रहना व नियमित रूप से व्यायाम न करना आदि।

ये सभी कारण पेट के उपर चर्बी बढाते हैं। जो हमें मोटापे का रूप देकर गंभीर परिणामों तक ले जाती है।

सबसे मजेदार बात यह है कि यह सब इतनी आसानी से हो जाता है कि ये इस भाग-दौड के जीवन में पता ही नहीं चलता और जब तक पता चलता है तब तो हमारा मन बस ये ही गुनगनाता है कि......क्या - से - क्या हो गया..........,देखते देखते ....।

❖❖❖❖

भ्रमण यात्रा

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी
एक यादगार सफर

श्रीमति अंजली खुशलानी
पत्नी श्री धर्म प्रकाश खुशलानी
उप प्रबंधक (वित्त)

हडको कार्यालय प्रतिवर्ष अपने कर्मचारियों, अधिकारियों व उनके परिवार के लिये अनेक प्रकार की गतिविधियों जैसे खेल दिवस, वार्षिक उत्सव, भ्रमण यात्रा का आयोजन करता है जिसमें सभी कर्मी अपने परिवार सहित अत्यन्त उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते है और उसे यादगार बना देते है।

उन्हीं यादगार लम्हों में से एक है हडको परिवार की इस वर्ष की भ्रमण –यात्रा । इस वर्ष हमें हडको क्षेत्रीय कार्यालय(भोपाल) द्वारा दो दिवसीय स्टैच्यू ऑफ यूनिटि भ्रमण यात्रा का अनुपम अवसर मिला। जिसके बारे में सुनते ही हम सबके चेहरे खुशी से ,खिल उठे। आखिर वह दिन आ ही गया जब हमें स्टैच्यू आर्फ यूनिटि देखने जाना था। हल्की सी गुलाबी ठंड थी और सभी इस यात्रा पर जाने के लिए एकदम तैयार थे। तो आइए आपको भी ले चलते है इस अविस्मरणीय व रोमांचक यात्रा पर ....

हमारी भ्रमण यात्रा का आरंभ होता है ट्रेन के सफर से। यह रात्रि का सफर था हम सभी ट्रेन में चढ़ते ही अपनी-अपनी बर्थ पर गर्म कम्बल में जाकर दुबक गए और इस यात्रा में क्या-क्या करेंगें इन्ही सपनों के साथ सो गए और प्रात:काल सूर्यदेवता के दर्शन के साथ हम सभी वड़ोदरा स्टेशन पर उतरे। वहॉं से अपने निजी वाहन (अरबेनिया द्वारा केवड़िया) स्थित होटल (द-फर्न - सरदार सरोवर रिसोर्ट) में पहुँच गए। जो केवड़िया के एकता नगर में स्थित है। यह रिसोर्ट चारों तरफ से हरियाली, पहाड़ों व प्राकृतिक सुंदरता से घिरा था, यहीं पर हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी।

प्रथम दिवस – हम सब जल्दी-जल्दी तैयार होकर भोजन के उपरांत स्टैच्यू आर्फ यूनिटी देखने निकल पड़े। सभी के मन में खुशी, उत्साह व उत्सुकता थी। हम अपने वाहन से हँसते, गाते, शोर मचाते अपने गंतव्य की तरफ बढ़ रहे थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की विशाल प्रतिमा हमें 7 किलोमीटर दूर से ही दिखाई दे रही थी इसलिए इसे नजदीक से देखने की इच्छा और बढ़ती ही जा रही थी। रास्ते में खूबसूरत घाटियॉं, प्राकृतिक दृश्य अपनी मनोरम छटा बिखेर रहे थे। इन सबका आनंद लेते हुए हम स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पहुँच गए। वहॉं से लोकल बस द्वारा हमें प्रतिमा परिसर में ले जाया गया, टिकट लेकर हम परिसर में दाखिल हुए जहॉं पर सबसे पहले हमारे सामान की जॉंच के बाद हमें अंदर प्रवेश दिया गया।

स्टैच्यू आर्फ यूनिटी सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की बड़ी प्रतिमा है, जिसे देखने प्रतिदिन हजारों पर्यटक आते है। इस प्रतिमा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा की मान्यता दी गई है। जिसने चीन की Spring Temple और अमेरिका के Statue of Liberty को भी पीछे छोड़ दिया है। प्रतिमा के अंदर जाते ही जानकारियों के खजाने खुलते ही जा रहे थे। स्टैच्यू आर्फ यूनिटी दो मंजिला इमारत है, जिसकी पहली मंजिल पर पुस्ताकलय, एम्फी थियेटर तथा दूसरी मंजिल पर सरदार पटेल मेमोरियल म्यूजियम, आदियों वीडियो विजुअल गैलरी है। इस प्रतिमा की संरचना, डिजाइन के बारे में जानकर अत्यंत आश्चर्य हुआ। इसे भारतीय मूर्तिकार राम सुतार द्वारा डिजाइन किया गया है। इस विशालकाय मूर्ति की ऊँचाई 182 मीटर(597 फीट) है। प्रतिमा के अंदर जाने के लिए एस्केलेटर व हाई स्पीड लिफट भी बनाई गई है जिसके द्वारा हम आसानी से प्रतिमा के अंदर (सीने तक) 400 फीट की ऊँचाई तक पहुँच गए। वहॉं पर बनी जालियों व झरोखे द्वारा सरदार सरोवर बॉंध, नर्मदा नदी, राजमार्ग आदि को स्पष्टता से देख सकते है।

ऐसा माना जाता है कि स्टैच्यू आर्फ यूनिटी को बनाने के लिये गुजरात के कई गॉवों से मिट्टी को इकट्ठा किया गया है इसलिये इसे एकता की दीवार भी कहा जाता है जो देश के लिए अन्न उगाने वाले किसानों को समर्पित है। इस प्रतिमा का निर्माण कार्य 31 अक्टूबर 2013 को एक भारतीय कंपनी (लार्सन एंड टूबो) द्वारा शुरू किया गया और उद्घाटन सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की 143 जंयती 31 अक्टूबर 2018 पर हमारे देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किया गया। यह प्रतिमा इस्पात व कांसे से बनाई गई है। स्टैच्यू आर्फ यूनिटी हमारे देश के गौरव, एकता व प्रगति का प्रतीक है तथा यह लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी को दी गई एक अनुपम श्रद्धांजलि है जिन्होने हमारे देश की स्वतंत्रता व एकीकरण के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सरदार वल्लभ भाई पटेल मेमोरियल संग्रहालय में कदम रखते ही हमारा स्वागत ज्ञान के अथाह सागर से हुआ जिसमें अनेक प्रदशर्नियों, मूर्तियों, चित्रों आदि के द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के जीवन और देश के लिये उनके द्वारा किये गए कार्यो व उनके समर्पण को दिखाया गया। वहॉं आंगतुको के लिए हेलीकापटर, नाव की सवारी, क्रूज आदि की भी व्यवस्था की गई है जिससे प्रतिमा की भव्यता को नजदीक से देखा जा सकता है। यह प्रतिमा इतनी विशाल है कि इसको कैमरे में कैद कर पाना अत्यन्त मुश्किल है हम तो प्रतिमा के पैर के अंगूठे जितने बौने लग रहे थे।

स्टैच्यू आर्फ यूनिटी परिसर के आसपास अनेक उद्यान बनाए गए है जिसमें प्रकृति की सुदंरता, बॉस, झाड़ियों, फूलों , घास व पेड़ो की श्रृखलाएॅ सबका मन मोह रही थी। शाम होते ही प्रतिमा परिसर के मार्गो पर बहुत सुंदर लाईटिंग की गई थी जिसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो हम स्वर्ग में आ गए है। अंधेरा होते ही स्टैच्यू आर्फ यूनिटी परिसर में एक विशेष कार्यक्रम (लेजर लाईट शो) प्रारंभ हुआ जिसे देखने की हम सब कब से प्रतीक्षा कर रहे थे। रंगबिरंगी लाईटों की रोशनी स्टैच्यू आर्फ यूनिटी की बनावट, सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के जीवन व उनकी उपलब्धियों की झांकी प्रस्तुत की गई। यह सब देखकर हम मंत्रमुग्ध हो गए। इस शो के समाप्त होने के बाद हम सब केवड़िया स्थित होटल में वापस आ गए और रात्रि भोजन के पश्चात विश्राम करने अपने अपने कमरों की तरफ चल दिये।

दूसरे दिन- प्रात: काल नाश्ते के बाद हम सब तैयार होकर बड़ोदरा स्थित लक्ष्मी विलास पैलेस देखने गए। यह पैलेस बड़ोदरा के शाही परिवार का निवास स्थान माना जाता है। इसे सन् 1890 में महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने बनाया था जो गुजरात के सबसे प्रभावशील शासक माने जाते है। यह महल 500 एकड़ में फैला हुआ है। इसको बनाने वाले वास्तुकार (मेजर चार्ल्स मेंट) थे। यह बड़ोदरा के मोतीबाग में जे.एन. मार्ग पर स्थित है। इस महल के अंदर हमें एक डिवाइस दिया गया जिसे कान में लगाकर महल के इतिहास के बारे में सुन सकते है। पैलेस में गुजरात राज्य की ऐतिहासिक विरासत, झूमर कलाकृतियों, अस्त्र-शस्त्र हथियार, अनेक प्रकार के चित्रों, विशाल पार्क, मैदान, गोल्फ, कोर्स, संग्रहालय व सांस्कृतिक समारोहों में उपयोग मे लाया जाता है। ऐसी ऐतिहासिक विरासतों को देखकर व उसके बारे में जान कर सबको बहुत अच्छा लगा।

इसके बाद इस रोमांचकारी यात्रा को यहीं पर समाप्त कर हम अहमदाबाद हवाई अड्डे की तरफ रवाना हुए और विमान द्वारा अहमदाबाद से भोपाल पहुँच गए। हम में से कई लोग पहली बार हवाई-यात्रा का आनंद ले रहे थे। इस यात्रा की यादें हमेशा हमारे मन को गुदगुदाती रहेंगी। इन्हीं यादों के साथ हम सबने अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान किया।

इस ऐतिहासिक व यादगार यात्रा के लिये हडको कार्यालय का हृदय से धन्यवाद।

❖❖❖❖

बिटिया, खुश रहना ससुराल

आशा वासवानी
वरि.प्रबंधक (सचिवीय)

बिटिया खुश रहना ससुराल
रहना सदा सुखी खुशहाल
खुशियों से झोली भर जाए
सुख आनंद सदा तू पाये
महके जीवन दमके भाल
बिटिया खुश रहना ससुराल
प्रेम की जोत जलाते रहना
भाव मधुर फैलाते रहना
नेह की खुशबू महक उठेगी
सपने नये सजाते रहना
पूजन करना ले अक्षत थाल

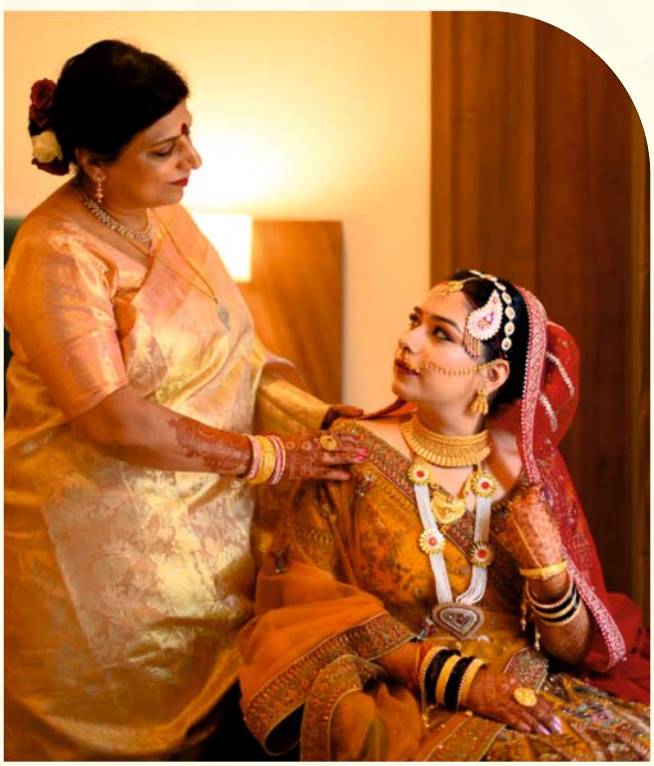

बिटिया खुश रहना ससुराल
ले आशीष झोली भरना
सास ससुर की सेवा करना
सबका करना आदर सम्मान
ऊंच-नीच का रखकर ध्यान
हर्षित हो हर पल साल
बिटिया खुश रहना ससुराल
खुशियों की चले बयार
सदा मिले अपनों का प्यार
मात-पिता की लेकर दुआएं
तेरा जीवन सुखमय हो जाए
चलना पल-पल कदम संभाल
बिटिया खुश रहना ससुराल

जीवन के मैले वस्त्र

सुनील कुमार
प्रबंधक (वित्त)

जीवन के वस्त्र, बीते कल की गलतियों और
खो चुके मौकों में भिगा कर रखे थे,
ज़िन्दगी की धूल जो बड़ी जमा हो गयी थी,
सही से साफ नहीं की,
तो अफ़सोस दाग रह जाएँगे,
या कहीं रंग फीके पड़ गए तो;
भिगोने के पश्चात मैंने आज के हौसले से उन्हें उठाया,
उनमें भरा पछतावा बड़ा भारी मालूम हुआ;
फिर भी मैनें उन्हें परिश्रम से थामे रखा,
और आज की हिम्मत से निचोड़ डाला;
कईं दुख टपक रहे थे,
देख कर दुख हुआ;
वहीं पास में,
आशाओं की डोरी बाँदी थी,

वक़्त की आग में,
जलकर काफ़ी कमज़ोर तो हो गई थी,
पर काफ़ी बल अब भी बाकी था उसमें;
मैं उसके पास गया,
वस्त्र की सतह पर नज़र आते संताप को झटकारा,
और सामने से आती,
आने वाले कल की उम्मीदों में सूखने डाल दिया;
उम्मीद है,
जब अगली दफ़ा जीवन उन्हें पहने,
तो उनमें से,
उम्मीद और आशा महक रहें हों;
और अगर कहीं,
किसी रंज की दुर्गन्ध फिर भी रह गयी,
मैं प्यार का इत्र छिड़क दूँगा,
विनम्रता की खुश्बू से महक उठेंगे।

प्रीतीबाला त्रिपाठी
प्रबंधक (सचिवीय)

स्वास्थ्य विशेषज्ञ सभी लोगों को अधिक से अधिक पैदल चलने की सलाह देते हैं, माना जाता है कि सेहत को दुरुस्त रखने में यह आदत काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पर कितनी देर पैदल चला जाए और इसके पीछे क्या विज्ञान है, यह सवाल आपके मन में भी जरूर आता होगा। अक्सर आपने देखा होगा, ज्यादातर फिटनेस ट्रैकिंग डिवाइस दिनभर में 10 हजार कदम चलने का गोल निर्धारित करते हैं, आखिर क्यों, आइए इस लेख में इस बारे में जानते हैं। 10 हजार कदम रोजाना चलने के पीछे का कारण असल में अनुसंधान और विज्ञान के साथ इतिहास से भी जुड़ा हुआ है। हार्वर्ड टी.एच. में महामारी विज्ञान के प्रोफेसर आई-मिन ली के अनुसार, रोजाना 10,000 कदम का लक्ष्य 1960 के दशक में जापान से लोकप्रिय हो गया। एक घड़ी निर्माता ने 1964 के टोक्यो ओलंपिक खेलों के बाद फिटनेस में रुचि रखने वाले लोगों के लिए पेडोमीटर का निर्माण किया, जिसमें स्वस्थ रहने के लिए रोजाना हर व्यक्ति के लिए 10 हजार कदम चलने का लक्ष्य रखा गया।

10 हजार कदम चलने के क्या फायदे हैं? : स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक सभी लोगों को स्वस्थ रहने के लिए रोजाना 10,000 कदम का लक्ष्य अवश्य रखना चाहिए, इसे रोजाना 40 मिनट पैदल चलने के बराबर माना जा सकता है। एक अध्ययन में बताया गया कि 70 के दशक में जो महिलाएं एक दिन में 4,400 कदम चलाती थीं, उनमें 2,700 या उससे कम चलने वाली महिलाओं का तुलना में आकस्मिक मृत्यु का जोखिम लगभग 40 फीसदी कम होता है। इसके अलावा अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि एक दिन में 5,000 कदम से अधिक चलने वाली महिलाओं में जल्दी मृत्यु का जोखिम कम होता है, वहीं जो महिलाएं रोजाना 10,000 कदम का लक्ष्य पूरा कर लेती हैं, वह अधिक स्वस्थ और जीवित रहती हैं।

ज्यादा पैदल चलने से समय से पहले मौत का खतरा कम : वहीं पिछले साल मध्यम आयु वर्ग के करीब 5000 पुरुषों और महिलाओं पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि अगर आप एक दिन में 10 हजार कदम चलने के गोल को पूरा नहीं कर पाते हैं तो 8 हजार कदम तो अवश्य चलना चाहिए। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि रोजाना 4 हजार कदम चलने वालों की तुलना में 8 हजार कदम चलने वाले लोगों में हृदय रोग या किसी अन्य कारण से समय से पहले होने वाली मौत का खतरा आधे से कम पाया गया। पर दुर्भाग्य की बात यह है कि हाल के अनुमानों के अनुसार, अमेरिका, कनाडा और अन्य पश्चिमी देशों में अधिकांश वयस्क एक दिन में औसतन 5,000 कदम से कम ही चल पाते हैं।

व्यायाम करना भी सभी के लिए आवश्यक : सभी लोग आज जितना चलते हैं, अगले दिन उससे थोड़ा अधिक चलने की गोल निर्धारित करें। औपचारिक शारीरिक गतिविधियों से संबंधित दिशानिर्देश में कहा गया है कि यदि आप किसी कारणवश वॉक करने के लक्ष्य को पूरा नहीं कर

पा रहे हैं तो सप्ताह में कम से कम 150 मिनट या रोजाना आधे घंटे का व्यायाम जरूर करें। सप्ताह में व्यायाम का यह लक्ष्य भी आपकी सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जा सकता है।

दिनचर्या में शामिल करें पैदल चलने की आदत : जाना ज्यादा से ज्यादा पैदल चलने की आदत बनाएं। खरीदारी और घर के काम जैसी रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान एक दिन में हम लगभग 5,000 कदम चल ही लेते हैं। इस लक्ष्य को थोड़ा सा ही बढ़ाने की जरूरत है, बस 2,000 से 3,000 कदम और चलकर आप एक आदर्श लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

इसे दिनचर्या बनाइए, लंबे और स्वस्थ जीवन के लिए यह आज के समय की सबसे प्रमुख जरूरतों में एक है।

और कविता के माध्यम से यह संकल्प लें ....

चल एक कदम और बढ़ा

चल एक कदम और बढ़ा,
थोड़ी मेहनत और कर,
सहारे की तुझे जरूरत क्या,
जब खुद में ही तू काफी है,
जब उन नन्हें पैरों से मीलो तूने मापा था,
जब उस समय थक कर तू कभी हारी नहीं,
तो फिर आज जीत में कोई गुजाइंश क्यों,
इस बार नई ऊंचाई को छू लेना,
एक उदाराहण पेश कर जाना,
आएं चाहे कितनी भी कठिनाइयां,
बस सबको मात दे देना,
अपने सपनों को साकार करना,
मौका मिला है जो ये,
इसे बस सफल बनाना,
डटे रहना, अड़े रहना,
भटकाव का साया भी पड़ने ना देना,
लक्ष्य को करना है हासिल,
यही सोच कोशिशें जारी रखना,
और बस एक कदम बढ़ाते रहना,।

चिकित्सा शिविर

हडको अपनी अनिवार्य सेवाएं के अलावा अन्य सेवाओ का आयोजन करता है और इसी तारतम्य में भोपाल द्वारा अपने कार्यालय परिसर पर्यावास भवन, भोपाल में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस परिसर में लगभग 22 कार्यालय है हडको क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा सभी कार्यालयों के कर्मचारियों को चिकित्सा शिविर में आने हेतु आमंत्रित किया गया था, ताकि ज्यादा से ज्यादा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा इसका लाभ उठाया जा सके।

चिकित्सा शिविर के छाया चित्र

डॉ भारती दादलानी, आयुर्वेद आचार्या के साथ संवादात्मक सत्र

डॉक्टर से परामर्श

चिकित्सा शिविर के दौरान चेकअप

चिकित्सा शिविर का हडको एवं पर्यावास परिसर में स्थित अन्य कार्यालयों के लगभग 200 कर्मचारी द्वारा लाभ लिया गया।

पहाड़ों का फूल

बुरांश

विनोद शर्मा
प्रबंधक (आई.टी.)

परिचय

बुरांश हिमालयी क्षेत्रों में 1500 से 4000 मीटर की मध्यम ऊंचाई पर पाया जाने वाला सदाबहार वृक्ष है। बुरांश का फूल लाल रंग का होता है, बुरांस के पेड़ों पर मार्च-अप्रैल माह में फूल खिलते हैं। बुरांस के फूलों का इस्तेमाल दवाइयों में किया जाता है, वहीं पर्वतीय क्षेत्रों में पेयजल स्रोतों को यथावत रखने में बुरांस महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बुरांश के फूलों का उपयोग आयुर्वेद में बहुत सारी बीमारियों के इलाज के लिए उपयोगी बताया गया है। यह फूल उत्तराखंड का राष्ट्रीय वृक्ष है। उत्तराखंड और हिमाचल में यह पाया जाता है। इसे पहाड़ी फूल भी कहते हैं। नेपाल का राष्ट्रीय फूल बुरांश है। ये फूल गर्मी के मौसम में होते हैं। पहाड़ों पर रहने वाले लोग गर्मी के मौसम में इसका शर्बत बनाकर पीते हैं। इसके अलावा इससे पराठा, चटनी, पकोड़े और वाइन भी बनाए जाते हैं।

बुरांश के फूल में उच्च मात्रा में पोटेशियम, कैल्शियम, विटामिन-सी और आयरन पाया जाता है। इस फूल का लाल गहरा रंग इसमें मौजूद फ्लेवोनॉइड के कारण होता है।

कई आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक दवाओं में बुरांश के फूलों और पत्तों का इस्तेमाल किया जाता है। एंटीइन्फलामेटरी प्रॉपर्टीज के कारण इसका इस्तेमाल गाउट, रुमेटिस्म, ब्रोंकाइटिस और अर्थराइटिस के इलाज के लिए किया जाता है। इसमें ऐसे पदार्थ होते हैं जो प्रोस्टेट, किडनी और यूरिनरी ब्लेडर की सूजन को दूर करते हैं। इसके अलावा मुंह में पेनफुल अल्सर, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रेक्ट और ओस्टिओअर्थराइटिस के इलाज में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

कई शोध के अनुसार, इसमें फायटोकेमिकल्स जैसे फेनॉल, सैपोनिन, जेंथोप्रोटीन, टैनीन, फ्लेवोनॉइड आदि होते हैं। इसमें क्वेरसेटिन (quercetin), रुटिन (rutin) और कौमारिक एसिड (coumaric acid) जैसे एक्टिव कंपाउंड होते हैं। ये तीनों कंपाउंड सेब में भी होते हैं। इन्हीं के कारण सेब को हेल्थ के लिए फायदेमंद माना जाता है। बुरांश की पत्तियों में फाइटोकेमिकल्स होते हैं। कुछ बीमारियों को ठीक करने के लिए बुरांश की पत्तियों का इस्तेमाल पारंपरिक औषधि के रूप में किया गया है।

खुशी ......

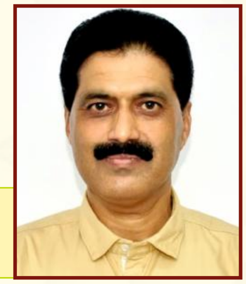

धर्म प्रकाश खुशलानी
उप प्रबंधक (वित्त)

किसी इंसान के लिए खुशी क्या है? हरेक के लिए खुशी के मापदंड अलग-अलग हो सकतें हैं। जैसे यदि एक गरीब व्यक्ति को दो वक्त की रोटी मिल जाए तो वो खुश होगा। और किसी दूसरे व्यक्ति को, जो व्यापारी है यदि उसकी दुकान पर अच्छी कमाई होगी तो वो भी खुश होगा। और तीसरा व्यक्ति जो कि एक कर्मचारी है, यदि उसका प्रमोशन हो जाए, सेलरी बढ़ जाए तो वो भी खुश होगा। इसके अलावा यदि किसी इंसान को बड़ा-सा घर मिल जाए, बड़ी-सी गाड़ी मिल जाए, तो वो भी खुशी मनाएंगे। एक बच्चा गुब्बारा बेचकर खुश होता है और दूसरा बच्चा उसे खरीदकर खुश होता है तथा तीसरा बच्चा उस गुब्बारे को फोड़कर खुश होता है। इस प्रकार हर इंसान के लिए खुश होने का अलग-अलग कारण हो सकता है।

यहाँ पर देखने वाली बात यह है कि प्रत्येक इंसान के लिए खुश होने की परिस्थितियाँ अलग-अलग है। देखा जाए तो इनकी खुशी परिस्थितियों पर निर्भर कर रही है, यदि इन सबकी परिस्थितियाँ इसके उल्ट हो जाएं तो शायद इनकी खुशी भी चली जाएगी। यदि पहले व्यक्ति को दो वक्त की रोटी न मिले, दूसरे व्यक्ति के दुकान पर अच्छी कमाई ना हो, तीसरे को प्रमोशन या सेलरी ना बढ़े तथा चौथे को बड़ी गाड़ी, बड़ा बंगला ना मिले तो! कहने का तात्पर्य यह है कि परस्थितियों के विपरीत होते ही सबकी खुशी दु:ख में बदल जाएगी। तो ऐसी खुशी किसी भी इंसान के पास कुछ समय तक ही रह सकती है। ऐसी खुशी सदैव नहीं रहती है।

यदि हमें वास्तव में खुश रहना है तो परस्थितियों पर निर्भर वाली खुशी या कुछ प्राप्ति वाली खुशी को छोड़कर मन से, स्वभाव से, आचरण से, खुश होने का तरीका ढूंढना होगा। उसके लिए परस्थिति, वस्तु, लाभ, प्राप्ति पर खुशी मनाने की बजाय तो जो सदैव खुशी आपके पास रहे ऐसा प्रयास होना चाहिए। इसके लिए आपको अपने मन:स्थिति को समझाना पड़ेगा, हर हाल में, हर परस्थिति में खुश रहने की कला सीखनी पड़ेगी। कुछ मिला या नहीं, कुछ अच्छा हुआ या नहीं, आपके चेहरे से खुशी, सौम्यता के भाव गायब नहीं होने चाहिए।

इंसान को हर हाल में खुश रहना चाहिए, बल्कि अपने स्वभाव, आचरण में भी यह बात प्रकट होनी चाहिए। हर समय मायूस, गमगीन, हमेशा शिकायत करने वाला, दु:खी इंसान नहीं होना चाहिए। स्वयं भी खुश रहें और दूसरों को खुशी दें। इसी का नाम जीवन है।

इसी संदर्भ में मुझे एक ऐसी कविता पढ़ने को मिली थी, जिसमें कहा गया है कि -

जिंदगी है छोटी, हर हाल में खुश हूँ,

काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ,
आज पनीर नहीं, दाल में खुश हूँ,

आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ,
दोस्तों के साथ नहीं, अकेला ही खुश हूँ,

आज कोई नाराज है, उसके इस अंदाज से ही खुश हूँ,
जिसको देख नहीं सकता, उसकी आवाज से ही खुश हूँ,

जिसको पा नहीं सकता, उसको सोचकर ही खुश हूँ,
बीता हुआ कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ,

आने वाले कल का पता नहीं, इंतजार में ही खुश हूँ,
हँसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ,

जिंदगी है छोटी, हर हाल में खुश हूँ।

जीवन मधुरस से परिपूर्ण है

हुकुमचंद चौकसे
सहायक प्रबंधक

एक बार एक व्यक्ति ने लियो टॉल्सटॉय से पूछा, **'जीवन क्या है?'** उन्होंने एक क्षण उस व्यक्ति की ओर देखा, फिर कहा – "एक बार एक यात्री जंगल से गुजर रहा था। अचानक एक जंगली हाथी उसकी तरफ झपटा, बचाव का अन्य कोई उपाय न देखकर वह रास्ते के एक कुएं में कूद गया। कुएं के बीच में बरगद का एक मोटा पेड़ था। यात्री उस पेड़ की जटा पकड़कर लटक गया। कुछ देर बाद उसकी निगाह कुएं में नीचे की ओर गई, नीचे एक विशाल मगरमच्छ अपना मुंह फाड़े उसके नीचे टपकने का इंतजार कर रहा था। डर के मारे उसने अपनी निगाह ऊपर कर ली। ऊपर उसने देखा कि शहद के एक छत्ते से बूंद-बूंद मधु टपक रहा था। स्वाद के सामने वह भय को भूल गया। उसने टपकते हुए मधु की ओर बढ़कर अपना मुंह खोल दिया और तल्लीन होकर बूंद-बूंद मधु पीने लगा, परन्तु यह क्या? उसने आश्चर्यचकित होकर देखा कि वह जटा के जिस मूल को पकड़कर लटका हुआ था, उसे एक सफेद और एक काला चूहा कुतर-कुतर कर काट रहे थे।

प्रश्नकर्ता की प्रश्नसूचक मुद्रा को देखकर टॉल्सटॉय ने कहा, 'नहीं समझे तुम?' उसने कहा, 'आप ही बताइए। तब वे समझाते हुए उससे बोले- 'वह हाथी 'काल' था, मगरमच्छ 'मृत्यु' थी। मधु 'जीवन-रस' था और काला तथा सफेद चूहा 'रात और दिन'। इन सबका सम्मिलित नाम ही जीवन है।

तात्पर्य यह है कि वर्तमान में हमारा जीवन सीमित समय तक के लिए है और हमें इसकी डैडलाइन भी मालूम नहीं है। फिर भी हम किसी भी प्रकार के भय से मुक्त रहकर अपने निर्धारित कार्यों में आनंदपूर्वक तल्लीन रहें। इसी का नाम जीवन है, जो मधुरस से परिपूर्ण है।

हर एक के जीवन में सुख और दुःख दोनों आते हैं जैसे कि समुद्र में ज्वार-भाटा। हमें चाहिए कि इन दोनों को एक 'समभाव' में लेते हुए समय का आदर करें यानि इसका एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दें।

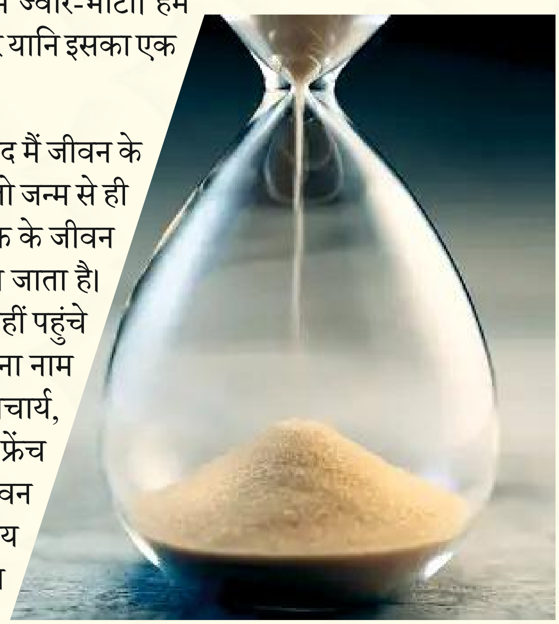

अगर कोई यह कहे कि 'अभी मेरी यूथ एज है, 40-50 का होने के बाद मैं जीवन के प्रति गंभीरता से सोचूंगा, तो यह उसका कोरा भ्रम है, क्योंकि जीवन तो जन्म से ही चलता आ रहा है। महान व्यक्तियों की जीवनियां बताती हैं कि व्यक्ति के जीवन का मूल्य उसकी लम्बी उम्र से नहीं, बल्कि उसकी कृतियों से आंका जाता है। यहां कुछ ऐसे व्यक्यिों के उदाहरण हैं जो 40-50 की आयु से ऊपर नहीं पहुंचे और वे अपनी महान कृतियों और उपलब्धियों के द्वारा विश्व में अपना नाम छोड़ गए। जैसे- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी विवेकानंद, स्वामी शंकराचार्य, जयशंकर प्रसाद, लाला हरदयाल, जॉन कीट्स, पी.बी. शैली, फ्रेंच दार्शनिक पास्कल, जॉन एफ. कैनेडी इत्यादि। क्योंकि मानव-जीवन बार-बार नहीं मिलता है। अतः इस सीमित जीवन में हम ऐसे प्रशंसनीय कार्य करके अपनी अमिट छाप यहां छोड़ें कि आगे चलकर दूसरे लोग उनसे 'प्रेरणा' लेते रहें।'

पेड़ लगाओ जीवन बचाओ

तुलसीराम मांडगे
ए.एफ. (एस.जी.)

साल के जैसे ही अप्रैल, मई, जून का महीना आता है भयंकर गर्मी सताने लगती है और फिर हम सभी को याद आता है पेड़ लगाओ, धरती बचाओ, ऐसा सिर्फ इसलिए हो रहा है प्रतिवर्ष गर्मी में लगातार वृद्धि और धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है जिसका मुख्य कारण लगातार पेड़ो की अंधाधुंध कटाई होना है।

जैसा की हम सभी जानते है की पेड़ो से ही ऑक्सीजन पैदा होती है जो इस धरती पर सभी जीव- जन्तुओ, हम सभी इंसानों के लिए बहुत ही आवश्यक है। बिना हवा और पानी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। वैसे तो ब्रह्माण्ड में बहुत सारे ग्रह है; लेकिन उन सभी ग्रहों में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिसपर जीवन है और पेड़ो के कारण ही इस धरती पर ऐसा सम्भव हो सका है। इन पेड़ो से ही पर्यावरण का निर्माण होता है जिनसे वायुमंडल में वर्षा होती है और फिर इस बरसात से धरती पर जीवन जीव जन्तुओ के पीने के पानी प्राप्त होते है जिस कारण से इस धरती पर जीवन की शुरुआत हुई है।

इस प्रकार देखा जाय तो हमारे जीवन के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन इन पेड़ो से ही प्राप्त होता है और खाने पीने का समान भी इन पेड़ पौधे से ही प्राप्त होते है और यहा तक की घर बनाने के लिए लकड़ी, विभिन्न प्रकार की औषधि, कपड़े, कागज, इमारती वस्तुए जैसे अनेको चीजे इन पेड़ो से ही प्राप्त होती है।

लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य की विकास की ओर बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे अत्यधिक जनसंख्या भार के चलते लोगो के रहने के लिए जंगलो को काटकर बड़े बड़े शहर बनाये जा रहे है जिस कारण से दिन प्रतिदिन पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है और नित नये नये प्राकृतिक आपदा देखने को भी मिल रहे है जो एक तरह प्रकृति द्वारा इंसानों के लिए चेतावनी है लेकिन फिर भी इन्सान अपने तरक्की की राह में प्रकृति की चेतावनी को भी अनसुना करता जा रहा है।

और यही हाल रहा है तो कुछ वर्षो पश्चात धरती पर कही भी पेड़ देखने तक को नही मिलेगे और फिर एक ऐसा समय भी आएगा जब इन्सान का अस्तित्व खुद से मिट जायेगा, और यदि समय रहते आज भी नही चेते तो फिर भविष्य में हमे कोई भी बचा नही सकता है।

तो ऐसे में लोगो को पेड़ पौधे के महत्व को समझना बहुत जरुरी है। जब सभी लोग पेड़ पौधे का महत्व समझेगे तो निश्चित ही पेड़ो की अंधाधुंध कटाई को रोक सकते है और पेड़ लगाओ जीवन बचाओ अभियान में लोगो को प्रेरित भी कर सकते है।

इंटरनेट एक जरूरत

शिवम शर्मा
पुत्र श्री विनोद शर्मा, प्रबंधक (आई.टी.)

इंटरनेट एक वैश्विक नेटवर्क है, जो पूरी दुनिया के कंप्यूटरों को एक साथ जोड़ता है। **इंटरनेट** के माध्यम से आज हम अपने ही रोज के काम को काफी आसानी से कर सकते हैं। इंटरनेट से काम करने में काफी आसानी होती है और समय भी काफी कम लगता है। आज के समय में बिना इंटरनेट की जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जैसे कि हम जानते हैं हर चीज का अपना एक फायदा और नुकसान होता है, वैसे ही इंटरनेट का हमारे जीवन में अच्छा और बुरा प्रभाव भी हुआ है। इंटरनेट के जरिए ऑनलाइन संचार करना बहुत ही आसान हो गया है। पुराने समय में संचार का माध्यम सिर्फ पत्र होता था, जो कि काफी लंबा समय लेने वाला और कठिनाई भरा होता था। इंटरनेट के जरिए किसी भी काम को काफी कम समय में करके लंबी दूरी को कम कर दिया है। वर्तमान समय में हम मेल के जरिए कुछ ही सेकंड में अपने संदेश दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आज के युग में पूरी दुनिया इंटरनेट के माध्यम से संचालित हो रही है। अगर 1 दिन भी इंटरनेट बंद हो जाए तो कई अरबों का नुकसान हो जाएगा। आज के समय शायद ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हुआ जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। इंटरनेट के जरिए हमें देश और विदेश की सभी नई जानकारियां प्राप्त होती हैं। इसके अलावा आप इंटरनेट के माध्यम से रातों-रात फेमस भी हो सकते हैं और बदनाम भी। आज इंटरनेट हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। इसके बिना कोई काम आज की तारीख में कर पाना संभव नहीं है। दुनिया की तमाम विकसित देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से इंटरनेट पर ही आधारित है। अगर इन देशों में इंटरनेट बंद हो जाए तो यकीन मानिए इन देशों की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो जाएगी। इंटरनेट का आज की तारीख में दुनिया और हमारे जीवन में विशेष महत्व है।

पहले के समय में जब दुनिया में इंटरनेट नहीं था, उस समय लोगों को कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था। जैसे बैंकों से पैसे लेने के लिए घंटों तक लाइन में खड़ा रहना पड़ता था।इसके अलावा अगर लोगों को रेलवे की टिकट लेनी है,

तो उसके लिए भी घंटों तक काउंटर पर लाइन में लगना पड़ता था, तब जाकर टिकट मिलती थी। आज इंटरनेट की मदद से मिनटों के अंदर मोबाइल की माध्यम से बैंक से पैसा निकाल सकते हैं। इसके अतिरिक्त अगर आपको रेलवे की टिकट करनी है तो मोबाइल से ही यह काम आसानी से हो जाता है।

आज इंटरनेट हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान में सभी लोग अपने मोबाइल में कई तरह की जानकारियां और सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। इन सभी चीजों के लिए इंटरनेट की जरूरत पड़ती है। फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर और यूट्यूब आदि जैसे कई सोशल प्लेटफॉर्म के लिए भी इंटरनेट की जरूरत होती है, तभी हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हम अपने मित्रों के साथ बातचीत, फोटो शेयर और अनेक प्रकार की गतिविधियों में भी सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, इसके अलावा अगर हमें कोई फाइल शेयर करनी हो तब भी इंटरनेट की जरूरत पड़ती है। वर्तमान समय में इंटरनेट का उपयोग रेलवे स्टेशन, शॉपिंग मॉल, सरकारी दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, हॉस्पिटल जैसे हर स्तर पर उपयोग किया जा रहा है। अगर आप किसी कंपनी में काम करते हैं, तो घर बैठकर भी कंपनी का काम इंटरनेट के माध्यम से आसानी से कर सकते हैं।

इंटरनेट के द्वारा हम सभी प्रकार के मनोरंजन का लुत्फ घर बैठे उठा सकते हैं जैसे, गाना सुनना, फिल्में देखना, न्यूज़ देखना इत्यादि। इंटरनेट से आप बिजली का बिल, गैस बुकिंग, रेल टिकट बुकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन अप्लाई, पढ़ाई, नौकरी खोजना, लोन लेना और उसका पेमेंट करना, विदेश की जानकारी लेना सिर्फ पर ही प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा आज घर बैठे आप किसी को भी चंद मिनटों में अपने अकाउंट से पैसे भेज सकते हैंऔर अपने अकाउंट में पैसे किसी भी देश से मंगवा सकते हैं। आज के समय में इंटरनेट के लाभ अनगिनत है।

इंटरनेट का उपयोग करना हमारे लिए नुकसानदायक भी हो सकता है। जैसी हम जब किसी भी इस शॉपिंग वेबसाइट पर कोई चीज खरीदते हैं तो वहां पर हम अपनी पर्सनल डिटेल डालते हैं। ऐसी में कुछ लोग आपकी पर्सनल जानकारी का गलत इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके साथ ऑनलाइन धोखाधड़ी भी हो सकती है, ऐसी स्थिति में हमें बचकर रहना चाहिए। जब आप ऑनलाइन पेमेंट करते हैं तब आपको सावधान रहने की जरूरत होती है।

अधिक इंटरनेट इस्तेमाल करने से आपके स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इंटरनेट का समय और बिना जरूरत के उपयोग से भी व्यक्ति का समय बर्बाद होता है। हमें इंटरनेट का उपयोग काफी सोच समझकर ही करना चाहिए। जहां एक तरफ इंटरनेट का उपयोग साइंटिस्ट खोज के लिए करते हैं, वही आतंकी भी इसका उपयोग लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए करते हैं। हम कह सकते हैं कि एक तरफ इंटरनेट काफी वरदान भरा है तो दूसरी ओर यह काफी खतरनाक भी हो सकता है। आज के समय में दिनों दिन ऑनलाइन हैकिंग के खतरे बढ़ते जा रहे हैं।

हडको ने मनाया 53वॉ स्थापना दिवस

53 वे वार्षिक दिवस की कुछ प्रमुख झलकियां:

क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा वार्षिक खेल दिवस मनाया गया।

कुछ प्रमुख झलकियां:

ANNUAL SPORTS DAY 2024

म. प्र. पुलिस हाउसिंग योजना इंदौर

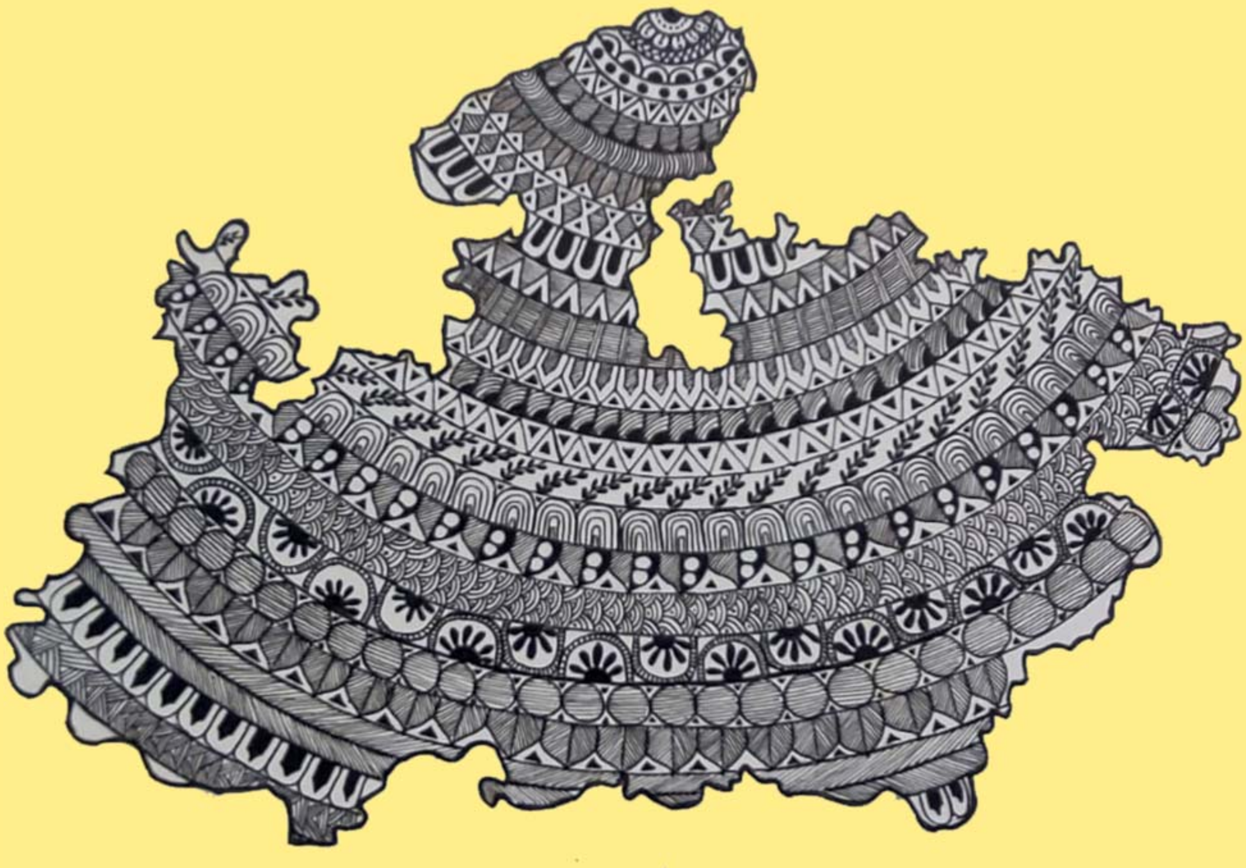

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

क्षेत्रीय कार्यालय-भोपाल
पर्यावास भवन, जेल रोड, अरेरा हिल्स, भोपाल– 462011